

सिद्ध मंत्र

सिद्ध पुरुषों द्वारा बताया गये मंत्र सिद्ध मंत्र कहलाते हैं !

शाबर मंत्र परिभाषा

श्री मत्स्येन्द्र नाथ जी के शिष्य तथा गुरु गोरख नाथ जी के गुरु भाई श्री शाबर नाथ जी के द्वारा इन मंत्रों को शक्ति प्रदान की जाने के कारण इन्हे शाबर मंत्र कहते हैं ! इनमें हनुमान जी हांक, लक्ष्मण, की आन, गुरु की शक्ति- मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा आदि वाक्य प्रयुक्त होते हैं ! इनके सिद्ध करने में कोई विशेष बहुत यम- नियम और हवन की आवश्यकता नहीं होती, भोले शंकर तथा पार्वती जी ने जिस समय अर्जुन से किरात वेश में युद्ध किया था उस समय भोले शंकर ने आगम चर्चा में पार्वती जी के प्रश्नों के उत्तर में यह मंत्र बताया थे जो भिल्ल प्रदत्त होने से शाबर मंत्र कहलाये, और योगियों महात्माओं के मंत्र में मुसलमानों के भी मंत्र शामिल हैं! मंत्र सिद्धि के बारे में बहुत सारी उपयोगी बातें आप को बताई गई हैं ! आजकल चोटी रखने का तो रिवाज उठ गया है, परन्तु चोटी हमारे शरीर का एरियल है ! शरीर के सबसे शीर्ष भाग जहां परमात्मा का अंश परमात्मा निवास है, उसके मंदिर की ध्वजा स्वरूप चोटी है ! अगर किसी के चोटी न हो तो कुशा की एक चोटी बनाकर अपने दाहिने कान पर लगा लेनी चाहिए, उस समय यह मंत्र पढ़ें

चिद् रूपिणी महामाये दिव्यतेज समन्विते !

तिष्ठ देवि शिखामध्ये तेजो वृद्धि कुरुष्व
में !!

इसके बाद यज्ञोपवीत धारण करना चाहिए, तथा ऋषि न्यास, करन्यास, अंग न्यास, छंद, बीज शक्ति कीलक ऋषि की अपने शरीर के अंगों सिर, मुख, हृदय, नाभि, गुह्य भाग, दोनों पैरों में स्थापना करनी चाहिए ! और जो भी देवता की पूजा कर रहे हो, उनको मूर्तिमान मानकर उन देवताओं के मंत्रों का पूजन वन्दन करना चाहिए !

माला से जाप किस प्रकार करें

माला १०८ मनको की होती है, और एक बड़ा मनका जहां पर धागा (जोड़) होता है, उसे सुमेरु कहते हैं ! उसका उल्लघन नहीं करना चाहिए, माला को वहां से मोड़ कर फिर जप शुरू करना चाहिए !

Leave a comment Posted in Tantra
Mar17

आठ मुख्य बीज इस प्रकार हैं

आ, ए, म	-	ऐं गुरु बीज
ह, र, इ, म	-	ह्रीं शक्ति बीज
क, ल, ई, म	-	क्लीं काली बीज
ट्रीं	-	तेजो बीज
स, त, र, इ, म	-	स्त्रीं शांति बीज
क, र, ई, म	-	क्रीं योग बीज
श, र, इ, म	-	श्रीं महालक्ष्मी बीज
हिं, ल, री, म	-	हिलरीम रक्षा बीज हैं

सामान्य वर्ण योजना वाले वर्ण अकूट मंत्र होते हैं !
वैदिक संहिताओं में दिए गये मंत्र वैदिक कहलाते हैं !
शिव- पार्वती संवाद, भैरव संवाद मंत्र तांत्रिक मंत्र कहलाते हैं !
पुराणों में देव उपासना वाले मंत्र पौराणिक मंत्र होते हैं !

माला मंत्र

बीस अक्षरों से बड़े मंत्र को माला मंत्र कहते हैं !

सिद्ध मंत्र

सिद्ध पुरुषों द्वारा बताया गये मंत्र सिद्ध मंत्र कहलाते हैं !

Leave a comment Posted in Tantra
Mar17

क विष बीज है
ख स्तम्भन बीज है
ग गणपति बीज है
घ स्तम्भन बीज है
ङ असुर बीज है
च चन्द्रमा बीज है
छ लाभ बीज एवं मृत्यु नाशक है
ज ब्रह्म राक्षस बीज है
झ चन्द्र बीज धर्म- अर्थ- काम मोक्ष बीज है
ञ मोहन बीज है
ट क्षोभण बीज चित को चंचल करने वाला है
ठ चन्द्र बीज, विष और अपमृत्यु नाशक है
ड गरुड का बीज है
ढ कुबेर बीज उत्तर दिशा में मुख करके चार लाख जप करने
से धन- धान्य की वृद्धि होती है
ण असुर बीज है
त आठ वसुओं का बीज है !
थ यम बीज मृत्यु भय दूर करता है !
द दुर्गा बीज वशीकरण व पुष्टि के लिए !
घ सूर्य बीज, यश और सुख की वृद्धि करने वाला है
न एकान्तर तिजारी को दूर करता है
प वीरभद्र और वरुण का बीज है
फ विष्णु बीज, धन- धान्य बढ़ाने वाला है !
ब ब्रह्म बीज वात- पित्त श्लेष्म का नाश करता है !
भ भद्रकाली बीज भूत- प्रेत, पिशाच के भय को दूर करने वाला है !
म माला, अग्नि, तथा रुद्र बीज, स्तम्भन, मोहन, और अष्ट महा सिद्धि का देने वाला है !
य वायु बीज उच्चाटन कारक है !
र अग्नि बीज उग्र कर्मों की सिद्धि देने वाला है !

ल इन्द्र बीज धन धान्य सम्पत्ति बढ़ाने वाला है !
व वरुण बीज विष तथा मृत्यु का नाश करने वाला है !
श लक्ष्मी बीज एक लाख जप करने से लक्ष्मी प्राप्त होती है !
ष सूर्य बीज धर्म- अर्थ, काम मोक्ष देने वाला है !
स वाणी बीज ज्ञान सिद्धि, वाक सिद्धि देने वाला है !
ह आकाश एवं शिव बीज है !
क्ष पृथ्वी बीज, नृसिंह, भैरव का भी यही बीज है !

Leave a comment Posted in Tantra
Mar16

वर्णा स्वर अक्षर मंत्र किन- किन चीजों के लिए होता है

अ अक्षर बीज मृत्यु नाशक

आ अक्षर बीज आर्कषण स्त्री लिंग दीर्घ स्वर

इ पुष्टि कारक नपुंसक लिंग ह्रस्व स्वर

ई आर्कषण के लिए

उ बल देने वाला

ऊ उच्चाटन के लिए, किसी व्यक्ति को उसके स्थान से विचलित कर देना !

ऋ स्तम्भन मोहन करने वाला

लृ विद्वेषण करने वाला

ए वशीकरण- किसी व्यक्ति को अपने अनुकूल कर देना

ऐ पुरुष वशीकरण के लिए

ओ लोक वश्य कारक

औ राज वश्य कारक

अं वन्य जीवो के वशीकरण के लिए

अः मृत्यु नाशक है

Leave a comment Posted in Tantra
Mar16

मंत्र दो प्रकार के होते हैं

आग्नेय मंत्र – जिन मंत्रों में पृथ्वी, अग्नि, आकाश तत्व होते हैं, आग्नेय मंत्रों के साथ नमः लगा देने से सौम्य हो जाते हैं !

सौम्य मंत्र – जिन मंत्रों में जल एवं वायु तत्व के वर्ण अधिक होते हैं, सौम्य मंत्रों के साथ फट् लगा देने से वह मंत्र आग्नेय बन जाते हैं !

पुरुष देवता या उग्र देवता के लिए आग्नेय मंत्र और स्त्री देवता के लिए सौम्य मंत्रों का व्यवहार करना चाहिए !

मारण, उच्चाटन, विद्वेषण, शत्रु दमन आदि कर्मों के लिए आग्नेय मंत्रों का प्रयोग करना चाहिए !

जिन मंत्रों के वर्ण परस्पर मिले हों उन्हें कूट मंत्र कहते हैं ! जैसे– ऊं ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे !

Leave a comment Posted in Tantra
Mar15

मंत्र साधना सम्बन्धी नियम

गुरु

अगर आपको गुरु नहीं मिलता है तो आप सर्व – व्यापक परमात्मा जो आपके अन्दर आत्मा है उस को

ही गुरु मान कर निराकार और साकार रूप में मूर्ति रूप का पूजन करना चाहिए ! जिस प्रकार एक लव्य ने गुरु द्रोणाचार्य को गुरु मानकर धनु — विद्या प्राप्त की और धनु — विद्या में अर्जुन से भी आगे निकल गये उसी प्रकार साधक को जो भी मंत्र करना हो श्रद्धा पूर्वक करने से मंत्र — सिद्ध हो जाता है !

श्रद्धा

जिस मंत्र की साधना करने चाहते हो उसमें पूर्ण विश्वास होना चाहिए, श्रद्धा की बड़ी शत्रु है शंका मन की शंकाओं का निवारण पहले ही कर लेना चाहिए ! “विश्वासम् फलति सर्वत्र” मंत्र में और भगवान में पूर्ण श्रद्धा होनी चाहिए !

शुद्धि

इसके लिए शास्त्रों में पंचगव्य का विधान है, पंचगव्य न हो तो गंगा जल से पवित्र हो आचमनी करें, और फिर गुरु मंत्र का पांच बार जाप करें !

मन शुद्धि

जप करते समय मन में कोई बुरे विचार नहीं होने चाहिए, जो आपका ईष्ट हो उसका ध्यान करना चाहिए, जिससे कि शुद्ध आत्मा का प्रतिबिम्ब दिखाई दे !

द्रव्य शुद्धि

उचित साधनों से कमाया होना चाहिए, साधना में उपयोग में आने वाली वस्तुएं शुद्ध धन से खरीदी होनी चाहिए !

क्रिया शुद्धि

मंत्र साधना के समय जो क्रियाएँ की जाती हैं, जैसे— मंत्र से सम्बन्धित न्यास, ध्यान, जप, प्रक्रिया, पुरश्चरण आदि शुद्ध होना चाहिए !

आसन

आसन कुशा, मृग छाला या ऊन का होना चाहिए, गृहस्थ के लिए ऊन और कम्बल का आसन ही उपयुक्त है ! जिस आसन पर आप जप के लिए बैठते हैं, उस पर कोई अन्य न बैठे, और पद्म आसन लगाकर बैठे !

ईष्ट देवता

मत और आत्म देवता जिसको आप मानते हैं, वह ईष्ट देवता होता है, वह विषियों से रक्षा करने के लिए, शत्रुओं को दण्ड देने के लिए एवं अभीष्ट कार्य की सिद्धि के लिए उन देवताओं की साधना की जाती है, उन्हें इष्ट देवता कहते हैं !

कुल देवता

कुल में जिस देवता की पूजा की जाती हो वह कुल देवता, घर में जिसकी पूजा होती हो, वह गृह देवता तथा ग्राम में पूजा जाने वाला ग्राम देवता कहलाता है, ब्रह्मा, प्रजापति, इन्द्र, मरुदगण, वरुण, अग्नि, वायु, नवग्रह आदि लोक देवता कहे जाते हैं !

मंत्र दो प्रकार के होते हैं

एक वैदिक और दूसरा तांत्रिक मंत्र को भोजपत्र या ताड पत्र पर लिखकर चांदी के पात्र में ईष्ट देवता के सामने चौकी पर रखकर पंचोपचार या शोडषोपचार से पूजन करना चाहिए, मंत्र में जितने अक्षर होते हैं उतने ही लक्ष जप करना चाहिए !

कुंडलिनी विद्या के बारे में हम पहले ही बता चुके हैं !

मंत्र निर्णय

कुछ मंत्र स्वयं सिद्ध कहे जाते हैं, उनके बारे में कुलाकुल चक्र का निर्णय नहीं किया जाता,

कुलाकुल चक्र चार्ट

तत्त्व – पृथ्वी – जल – अग्नि – वायु – आकाश

वर्ण – उ ऊ औ ग – ऋ ॠ ओ घ – इ ई ए ख – अ आ ए क – लृ लृ अं ड.

ज ड न ब – झ ढ ध भ – छ ठ थ – च ट त प – ज ण न म

ल छ – ब स – र क्ष – य ष – श ष

तत्त्व मैत्री चक्र

तत्त्व – पृथ्वी – जल – अग्नि – वायु – आकाश

मित्र – आकाश – आकाश – आकाश – आकाश – पृथ्वी जल

जल – पृथ्वी – वायु – अग्नि – अग्नि, वायु, चारों तत्त्व

शत्रु – वायु – अग्नि – जल – पृथ्वी – कोई नहीं

स्वयं सिद्ध मंत्र

ॐ नमः शिवाय, ॐ राम रामाय नमः, ये स्वयं सिद्ध मंत्र हैं !

Leave a comment Posted in Tantra
Mar15

ऊर्ध्व लक्ष आकाश मध्य में दृष्टि मन को ऊर्ध्व करके वहीं स्थापित कर लक्ष्य दृढ़ करने से परमात्मा के तेज के साथ नेत्र दृष्टि अच्छी होती है नासिका के ऊपर द्वादश अंगुल मूल पर्यन्त दृष्टि करें, फिर नासिका

के अग्र भाग में स्थिर दोनो लक्ष्यों को करने से पवन स्थिर हो जाती है

बाह्य अन्तर में आकाश लक्ष्य हो तो शून्य लक्ष्य करना चाहिए ! जागृत दशा में, चलने में, भोजन करने में शून्य का ध्यान करना चाहिए

इसके करने से शरीर में कोई विकार नहीं होता !

राज-योग

राजयोगी गुफा में रहता है, और पृथ्वी में रहकर भी वह कभी मृत्यु को प्राप्त नहीं होता और किसी प्रकार के भोग- विलास की उसकी इच्छा से परे होता है ! किसी प्रकार के हानि लाभ का कोई दुःख नहीं होता और न ही किसी प्रकार का अभिमान, और न ही किसी प्रकार का भय होता है, यह राज- योग कहलाता है !

Leave a comment Posted in Tantra
Mar14

कुण्डली विधा

मूल कन्द स्थान में एक तेज रुपी नाडी है ! इसमें योग करने वाले को योगी कहा जाता है ! यह एक नाडी ही इडा चन्द्र नाडी, पिंगला नाडी सूर्य, सुषुम्णा (कंठ) प्राण इन तीनों भेदों को प्राप्त होती है ! इडा नाडी बाईं हाथ की और होती है ! पिंगला दाहिने हाथ की और होती है ! मध्य भाग में अति सूक्ष्म विधुत्त के समान प्रभाव वाली होती है ! यह भक्ति- मुक्ति देने वाली है ! इसके योग से योगी पुरुष सर्वज्ञ होता है ! सुषुम्णा ज्ञान उत्पत्ति नाडी है ! आदि में चतुर्दल, मूल चक्र है ! पहला आधार चक्र गुदा स्थान में है ! लाल वर्ण गणेश देवता बुद्धि शक्ति का वाहन मूषक कूर्म ऋषि है, आकुचन मुद्रा है, अपान वायु है, और चारो दलो में – रज, सत्व, तम, मन है ! वं, शं, षं, सं, अक्षर युक्त है ! मध्य त्रिकोण में त्रिशिखा युक्त त्रिकोण के आकार का काम पीठ है ! उस शिखा के मध्य में अग्नि के शिखा के समान प्रकाशमान एक मूर्ति है, उस का ध्यान करने से सभी शास्त्र विना अभ्यास ही मन में स्फूर्ति आ जाती है, दूसरा अधिष्ठान चक्र है वह छः दल युक्त उपायन पीठ है वही अक्षर रूप है वायु और तेज के द्वारा मूर्ति और वर्ण झलकता

है ! इसके मध्य लाल वर्ण का तेज है उसके ध्यान से साधक अति सुन्दर और युवा हो जाता है और स्त्रियों का प्रिय होता है ! तीसरा नाभि स्थान में दस दल का कमल है मध्य में पंच कोण चक्र विद्यमान है उसके मध्य में एक मूर्ति है जिह्वा उसका तेज नहीं कह सकती है उस मूर्ति का ध्यान करने से पुरुष का शरीर स्थिर हो जाता है ! चौथा हृदय के मध्य में एक कमल दल है वह अति तेजोमय होने से दृष्टि गोचर नहीं होता है उसके मध्य में अष्टदल अधोमुख कमल है और उसके मध्य प्राण – वायु का स्थान है अष्ट कमल के मध्य लिंगाकार कर्णिका है उसकी कर्णिका संज्ञा है उसके मध्य पद्म राग मणि के समान अंगुष्ठ प्रमाण एक पुतली है ! उस की जीव संज्ञा है उसका बल और स्वरूप कोटि जिह्वा भी नहीं कह सकती है ! इस मूर्ति का ध्यान करने से स्वर्ग, पाताल, आकाश, गन्धर्व, किन्नर, गुह्यक, विधाधर, पुरुष – स्त्रियां वशीभूत होती है ! पांचवें कंठ स्थान में सोलह दल का कमल दल का विधान है ! उसमें कोटि सूर्य के समान प्रकाश है, इसका ध्यान करने से असाध्य रोग भी दूर हो जाते हैं ! और एक सौ वर्ष (लम्बी आयु) को प्राप्त होता है ! भ्रू के मध्य छठवां आज्ञा चक्र वह दो दल के मध्य अग्नि ज्वालाकार युक्त है इसका ध्यान करने से अजर – अमर हो जाता है ! तालु में चौसठ दल का अमृत पूर्ण एक कमल है, वह अति श्वेत और उसके मध्य में लाल वर्ण कंटिका सज्ञक एक कर्णिका है, उसके मध्य में भूमि है, उसके मध्य में प्रगट चन्द्रकला अमृत रूप है, इसके ध्यान करने से पुरुष के समीप मृत्यु नहीं आती निरन्तर ध्यान करने से अमृत धारा पडनी शुरु होती है, उसकी जिह्वा जड – भाव से रहित होती है, यदि इसमें मन स्थिर हो जाय तो मनुष्य को जहर का भी असर नहीं होता है ! ब्रह्मरंध्र में आठवां सौ दल का चक्र है, उसकी कमल जात धरनी पीठ संज्ञा है, यह ही सिध्द पुरुष का स्थान है, उसके बीच में अग्नि धूमाकार रेखावत दृश्या – दृश्य एक पूरुष मूर्ति है, उसका आदि अन्त नहीं है, इसका ध्यान करने से मनुष्य आकाश में गमन कर सकता है, और पृथ्वी में स्थित रहकर भी मनुष्य को पृथ्वी के पदार्थों से बाधा नहीं होती सभी पदार्थों (वस्तुओं) को निरन्तर प्रत्यक्ष देख सकता है, और आयु बढ़ जाती है ! नवम् चक्र की महाशून्य संज्ञा है, इसके ऊपर कुछ नहीं है, यह पूर्णगिरी पीठ है, इसी को महासिध्द (महाशून्य) चक्र कहते हैं, इसके मध्य में ऊर्ध्व मुख अतिलाल वर्ण सब शोभा का स्थान अनेक कल्याण पूर्ण सहस्रदल एक कमल है जिसकी गंध मन वचन के अगोचर है उस कमल के मध्य में त्रिकोण रूपा एक कर्णिका है ! उस में सत्रहवीं निरंजन रूपा एक कला है, उसका तेज कोटि सूर्य के समान है, परन्तु तेज रूप का उद्भव नहीं है, इसकी प्रभा कोटि चन्द्र के समान शीतल है इस कला के ध्यान करने से साधक के मन में किसी प्रकार का दुःख नहीं होता इसके ऊपर अनन्त परमानन्द का स्थान है उसमें ऊर्ध्व शक्ति निवास करती है इस प्रकार यह एक संज्ञा वाली कला है यह भोग विलास वाली कला शक्ति है यह शुक्ल पक्ष के चन्द्र के समान प्रतिदिन बढ़ती है पाप मनुष्य के शरीर को नहीं छू सकता यह योग ध्यान है !

आगे देखिए योग के द्वारा रोग निदान कैसे करें

Leave a comment Posted in Tantra

Mar13

जप करने के लिए पांच प्रकार की गोमुखी

- (१) वशीकरण में— लाल रंग की नौ अंगुल की गोमुखी का प्रयोग करें
- (२) आर्कषण में — हरे रंग की पच्चीस अंगुल की गोमुखी का प्रयोग करें
- (३) स्तम्भन, उच्चाटन में — सफेद रंग की बत्तीस अंगुल की गोमुखी का प्रयोग करें
- (४) मारण में — नीले रंग की पन्द्रह अंगुल की गोमुखी का प्रयोग करें
- (५) मोहन में — चितकवरी रंग की गोमुखी का प्रयोग करें

शक्ति पूजा में शंख माला संस्कार

शंख माला गूँथने के लिए कपास का सूत धर्म अर्थ काम मोक्ष को देने वाला है

ब्राह्मण कन्या के हाथ का काता हुआ सूत अति उत्तम है, चारों वर्णों के लिए सूत का रंग क्रमशः सफेद, लाल, पील, और काला सूत उत्तम है !

माला संस्कार

सर्वत्र नौ कोने के (नवकोण) और पीपल के पत्ते पर माला की स्थापना करनी चाहिए फिर प्राण प्रतिष्ठा एवं पूजन कर माला जप करने योग्य होती है !

कुलकुलादि चक्र

कुलाकुल चक्र बना कर अकार से लेकर क्षकार तक सब वर्ण और उनकी श्रेणियां विभिन्न कक्षाओं में देवताओं के अनुसार विभक्त हैं!

जैसे— अ, आ, ए, क, च, ट, त, प, य, मारुत (वायु) वर्ण के हैं !

इ, ई, ऐ, ख, ल, ठ, थ, फ, र, क्ष, आग्नेय (अग्नि) वर्ण के हैं !

उ, ऊ, ओ, ग, ज, ड, द, न, ल ये पार्थिव वर्ण के हैं !

कौन सा मंत्र किस व्यक्ति के लिए अनुकूल है ! यह अपने नक्षत्र, तारा, और कोष्ठ के अनुकूल मंत्रों का जाप करना चाहिए !

मुद्रा

मुद्रा देवताओं के प्रसन्नता के लिए मनुष्य की पाप राशि (व्याधि) का नाश होता है ! इसलिए मुद्रा सर्व-क्रम साधिका कही गयी है !

पूजा, जप, ध्यान, आवाहन, नैवेध-निवेदन आदि में मुद्रा आवश्यक है !

तांत्रिक प्रयोग मुद्रा विवरण

अंकुश मुद्रा, कुंभ मुद्रा, अग्निप्राकार मुद्रा, ऋष्यादिन्यास मुद्रा, षड-अंग मुद्रा, मालिनी मुद्रा, शंख मुद्रा, मतस्य मुद्रा, आवाहनादि नौ मुद्रायें. चक्र-

मुद्रा, गणेश मुद्रा, शाक्त मुद्रा, शैव मुद्रा, गंध मुद्रा, चक्र मुद्रा, ग्रास मुद्रा, प्राणादि पांच मुद्राएं, सात जिह्वा मुद्राएं, भूत-बलि मुद्रा, संहार मुद्रा, अन्य

९७ मुद्राएं, जैसे- पाश मुद्रा, गदा मुद्रा, शूल मुद्रा, खड्ग मुद्रा, आदि मुद्रा करने से तंत्र विधा में सफलता मिलती है !

Leave a comment Posted in रेखा-मंत्र-आकर्षण-के-लिए
Mar10

संहारक्रम: मोक्ष प्राप्ति के लिए

गीता का पाठ प्रति दिन संहार क्रम से तीन पाठ को करे, चालीस दिन तक अठारह अध्याय से प्रथम अध्याय तक

१८. १७. १६. १५. १४. १३. १२. ११. १०. ९. ८. ७. ६. ५. ४. ३. २. १.

श्री कामना के लिए स्तिथिक्रमः गीता पाठ

पांच अध्याय से अठारह अध्याय तक— ५. ६. ७. ८. ९. १०. ११. १२. १३. १४. १५. १६. १७. १८.

फिर चौथा अध्याय से एक तक का — ४. ३. २. १

सृष्टि क्रमः गीता पाठ

इस श्लोक को प्रतिदिन पढ़ें भय भूत-प्रेत दूर होता है

मंत्र

स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या जगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यते च !

रक्षांसि भीतानिदिशोद्रवन्ति सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धि सद्भाः भीतानि दिशो द्रवन्ति !!

ॐ नरसिंहाय नमः ॐ प्रचक्राय स्वाहा

ॐ विचक्राय स्वाहा ॐ सुचक्राय स्वाहा

ॐ ज्वालाचक्राय स्वाहा ॐ असुरान्तक

चक्राय स्वाहा ॐ महासुदर्शन चक्राय स्वाहा

इस श्लोक से साम्पुटित कर पाठ करें १०० सौ आवृत्ति करने पर सभी मनोरथ सिद्ध होते हैं

मंत्र

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।

तत्र श्रीर्विजयोभुतिर्ध्रुवानीति-र्मतिर्मम॥

उपरोक्त संहार स्थिति सृष्टि है जिस वर्ग का हो, उसके अनुसार वह संपुटित् पाठ करे !

गीता अध्याय ११/३६ श्लोक का साम्पुट मंत्र का एक लाख पाठ करने से प्रेत पीडा दूर करने वाला

एवं मनोकामना को पूर्ण करने वाला, निष्काम से पाठ करने वाले को भगवद् दर्शन होता है !

हवन विधान

शांति कर्म — शांति कर्म में दूध, घी, तिल, अमर बेल, खीर एवं गूलर, पीपल की समिधा से हवन करें !

पुष्टि कर्म — बेलपत्र, चमेली के फूलों से हवन करें !

आर्कषण में — चिरोंजी व विल्वफल का हवन करें !

वशीकरण में — राई और नमक का हवन करें !

उच्चाटन में — कौऐ के पंख का हवन करें !

मोहन में — धतूरे के बीजों से हवन करें !

लक्ष्मी प्राप्ति में — दही, घृत लुप्त अन्न एवं कमलगट्टे का हवन करें !

कन्या की इच्छा में — खीर से हवन करें !

जप करने के लिए पांच प्रकार की गोमुखी

(१) वशीकरण में— लाल रंग की नौ अंगुल की गोमुखी का प्रयोग करें

(२) आर्कषण में — हरे रंग की पच्चीस अंगुल की गोमुखी का प्रयोग करें

(३) स्तब्धन, उच्चाटन में — सफेद रंग की बत्तीस अंगुल की गोमुखी का प्रयोग करें

(४) मारण में — नीले रंग की पन्द्रह अंगुल की गोमुखी का प्रयोग करें

(५) मोहन में — चितकवरी रंग की गोमुखी का प्रयोग करें

शक्ति पूजा में शंख माला संस्कार

शंख माला गूँथने के लिए कपास का सूत धर्म अर्थ काम मोक्ष को देने वाला है

ब्राह्मण कन्या के हाथ का काता हुआ सूत अति उत्तम है, चारों वर्णों के लिए सूत का रंग क्रमशः सफेद, लाल, पील, और काला सूत उत्तम है !

माला संस्कार

सर्वत्र नौ कोने के (नवकोण) और पीपल के पत्ते पर माला की स्थापना करनी चाहिए फिर प्राण प्रतिष्ठा एवं पूजन कर माला जप करने योग्य होती है !

कुलकुलादि चक्र

कुलाकुल चक्र बना कर अकार से लेकर क्षकार तक सब वर्ण और उनकी श्रेणियां विभिन्न कक्षाओं में देवताओं के अनुसार विभक्त हैं!

जैसे- अ, आ, ए, क, च, ट, त, प, य, मारुत (वायु) वर्ण के हैं !

इ, ई, ऐ, ख, ल, ठ, थ, फ, र, क्ष, आग्नेय (अग्नि) वर्ण के हैं !

उ, ऊ, ओ, ग, ज, ड, द, न, ल ये पार्थिव वर्ण के हैं !

कौन सा मंत्र किस व्यक्ति के लिए अनुकूल है ! यह अपने नक्षत्र, तारा, और कोष्ठ के अनुकूल मंत्रों का जाप करना चाहिए !

मुद्रा

मुद्रा देवताओं के प्रसन्नता के लिए मनुष्य की पाप राशि (व्याधि) का नाश होता है ! इसलिए मुद्रा सर्व-क्रम साधिका कही गयी है !

पूजा, जप, ध्यान, आवाहन, नैवेध- निवेदन आदि में मुद्रा आवश्यक है !

तांत्रिक प्रयोग मुद्रा विवरण

अंकुश मुद्रा, कुंभ मुद्रा, अग्निप्राकार मुद्रा, ऋष्यादिन्यास मुद्रा, षड-अंग मुद्रा, मालिनी मुद्रा, शंख मुद्रा, मतस्य मुद्रा, आवाहनादि नौ मुद्रायें. चक्र-

मुद्रा, गणेश मुद्रा, शाक्त मुद्रा, शैव मुद्रा, गंध मुद्रा, चक्र मुद्रा, ग्रास मुद्रा, प्राणादि पांच मुद्राएं, सात जिह्वा मुद्राएं, भूत-बलि मुद्रा, संहार मुद्रा, अन्य

९७ मुद्राएं, जैसे- पाश मुद्रा, गदा मुद्रा, शूल मुद्रा, खड्ग मुद्रा, आदि मुद्रा करने से तंत्र विधा में सफलता मिलती है !

Leave a comment Posted in रेखा-मंत्र-आकर्षण-के-लिए
Mar10

संहारक्रम: मोक्ष प्राप्ति के लिए

गीता का पाठ प्रति दिन संहार क्रम से तीन पाठ को करे, चालीस दिन तक अठारह अध्याय से प्रथम अध्याय तक

१८. १७. १६. १५. १४. १३. १२. ११. १०. ९. ८. ७. ६. ५. ४. ३. २. १.

श्री कामना के लिए स्तिथिक्रम: गीता पाठ

पांच अध्याय से अठारह अध्याय तक- ५. ६. ७. ८. ९. १०. ११. १२. १३. १४. १५. १६. १७. १८.

फिर चौथा अध्याय से एक तक का - ४. ३. २. १

सृष्टि क्रम: गीता पाठ

इस श्लोक को प्रतिदिन पढ़ें भय भूत-प्रेत दूर होता है

मंत्र

स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या जगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यते च !

रक्षांसि भीतानिदिशोद्रवन्ति सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धि सद्धाः भीतानि दिशो द्रवन्ति !!

ॐ नरसिंहाय नमः ॐ प्रचक्राय स्वाहा

ॐ विचक्राय स्वाहा ॐ सुचक्राय स्वाहा

ॐ ज्वालाचक्राय स्वाहा ॐ असुरान्तक

चक्राय स्वाहा ॐ महासुदर्शन चक्राय स्वाहा

इस श्लोक से साम्पुटित कर पाठ करें १०० सौ आवृत्ति करने पर सभी मनोरथ सिद्ध होते हैं
मंत्र

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।

तत्र श्रीर्विजयोभुतिर्ध्रुवानीति-र्मतिर्मम॥

उपरोक्त संहार स्थिति सृष्टि है जिस वर्ग का हो, उसके अनुसार वह सपुटित् पाठ करे !

गीता अध्याय ११/३६ श्लोक का साम्पुट मंत्र का एक लाख पाठ करने से प्रेत पीडा दूर करने वाला
एवं मनोकामना को पूर्ण करने वाला, निष्काम से पाठ करने वाले को भगवद् दर्शन होता है !

Leave a comment Posted in रेखा-मंत्र-आकर्षण-के-लिए
Mar9

गारुडी सर्प विद्या मंत्र

ॐ तत्कारी मत्कारी विषहारिणि विषदूषिणी विषसर्पिणि विषनाशिनी हतं विषं नष्टं विषं प्रणष्टं हतं ते ब्रह्मण
विषं हत -मिन्द्रस्य वज्रेण स्वाहा !!१

नागानां सर्पाणां वृश्चिकानां लूतानां प्रलूतानां गोधानां गृहगोधानां मूषकानां स्थाराणां जंगमानां यधनन्तक
दूतस्त्वं यदि वानन्तकः स्वयम् यदि वासुकिः स्वयम् यदि तक्षक-दूतस्त्वं यदि वातक्षकः स्वयम् यदि
कर्कोटक दूतस्त्वं यदि वा कर्कोटकः स्वयम् यदि शंख-पुलकदूतस्त्वं यदि वा शंखपुलकः स्वयम् यदि
पद्मकः स्वयम् यदि महापद्मक पत्रकः स्वयम् यदि महैला पत्रकः दूतस्त्वं यदि वा महैला- पत्रकः स्वयम्
यदि कम्बला श्वतर दूतस्त्वं यदि वा कम्बलाश्वतरः स्वयम् यदि कालिका दूतस्त्वं यदि वा कालिकः
स्वयम् यदि कुलिक- दूतस्त्वं यदि वा कुलिकः स्वयम् य इमां महाविधाममाख्यायां-शृणुयाद्
द्वादशवर्षनन्त दशन्ति सर्पाः अष्टौ ब्राह्मणान्ग्राह्यत्वा तृणेन मोक्षयति भस्मना मोक्षयति शतं
ब्राह्मणान्ग्राह्यत्वा चक्षुषा मोक्षयति सहस्रब्राह्मणान्ग्राह्यत्वा मनसा मोक्षयति इत्याह् भगवान् ब्रह्मा आह्
भगवान् ब्रह्मा ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

Leave a comment Posted in रेखा-मंत्र-आकर्षण-के-लिए Tagged गारुडी सर्प विद्या मंत्र
Mar9

अष्ट सिद्धियां

अणिमा — अपने शरीर को अणु के समान सूक्ष्म कर लेना

महिमा — अपने शरीर को बहुत बड़ा कर लेना

गरिमा- अपने शरीर को बहुत भारी कर लेना

लघिमा- अपने शरीर को बहुत हल्का कर लेना

प्राप्ति - कोई पदार्थ चाहे कितनी भी दूर हो उसको प्राप्त कर लेना

प्राकाम्य- इच्छा का पूर्ण हो जाना

ईशत्व - शरीर और अन्तः करणादि एवं सम्पूर्ण एश्वर्य भोगों और भौतिक पदार्थों को प्राप्त कर लेने में समर्थ

वशित्व- सब प्राणियों को अपने वश में ऐसा कर लेना कि कोई भी अपने वचन का उल्लघ्न न कर सके

Leave a comment Posted in रेखा-मंत्र-आकर्षण-के-लिए

Mantra

Feb20

रेखा मंत्र

मामभिरक्षय रघुकुल नायक ! धृत वर चाप रुचिर कर सायक ! !

पुत्र प्राप्ति के लिये

प्रेम मगन कौसल्या निसदिन जात न जान ! सुत सनेह बस माता वाल चरित कर गान !!

विपत्ति नाश के लिये

राजिव नयन धरे धनु सायक ! भगत विपत्ति भंजन सुख दायक !!

मुकदमा जीतने के लिये

पवन तनय बल पवन समाना ! बुद्धि विवेक विद्यानिधाना !!

विधा प्राप्ति के लिये

गुरु गृह गए पढन रघुराई ! अल्पकाल विधा सब आई !!

आकर्षण के लिए

जेहि के जेहि पर संत्य सनेहू ! सो तेहि मिलइ न कछु संदेहु !!

परीक्षा में पास होने के लिए

जेहि पर कृपा करही जनु जानी ! कवि उर अजिर नचावहीं बानी !!

मोरि सुधारिहि सो सब भाती ! जासु कृपा नही कृपा अघाती !!

लक्ष्मी प्राप्ति के लिये

जिमि सरिता सागर महुं जाहीं ! जधपि ताहि कामना नाहीं !!

तिमि सुख संपत्ति विनहिं बोलाएं ! धरम सील पही जाही सुभाएं !!

बिघ्न नाश के लिए

सकल विघ्न व्यापहिं नहिं तेहिं ! राम सु कृपा विलोक ही जेही !!

विधि:

चौपाई मंत्र का विधान यह है _ रात के दस बजे के बाद अष्टांग हवन की सामग्री सहित माला लेकर एकान्त में बैठ जाना चाहिए अपना मुख काशी की ओर कर लेना चाहिए एक माला हवन करें चौपाई साथ पढ़ें इस तरह एक सौ आठ बार हवन करें मंत्र सिद्ध हो जाएगा फिर जब जिस कार्य की आवश्यकता हो इनका श्रद्धा पूर्वक पाठ करता रहे जब तक कार्य सिद्ध न हो